ShodhShreejan: Journal of Creative Research Insights
October-December 2026 3(3)
https://shodhshreejan.com/

Original Article

ARTIFICIAL INTELLIGENCE AND HUMAN-MACHINE RELATIONS IN 21ST-CENTURY HINDI SHORT FICTION: A CRITICAL STUDY OF STORIES PUBLISHED AFTER 2015

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मनुष्य–मशीन संबंध : वर्ष 2015 के बाद की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

Dr. N. P. Prajapati [1*]
[1] Assistant Professor and Head, Department of Hindi, Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal, Madhya Pradesh, India

ABSTRACT

English: This research paper explores artificial intelligence and human-machine relationships within twenty-first-century Hindi short fiction. While the study focuses primarily on stories published after 2015, it also examines earlier science fiction to provide necessary context. Over the past decade, smartphones, social media algorithms, and generative artificial intelligence have transformed our social lives, identities, and ways of thinking and writing.

In Hindi fiction, technology has emerged through two distinct paths. The first is that of science fiction, which raises ethical questions concerning robots, artificial intellects, and autonomous machines. The second path lies within mainstream realistic fiction, where invisible algorithms, data-driven surveillance, virtual isolation, and market-driven technologies subtly reshape human relationships from within.

The analysis draws upon Darko Suvin's concept of "cognitive estrangement" and post-humanist discourse. The study examines works by authors including Dr. Arvind Mishra, Devendra Mewari, Dr. Kalpana Kulshreshtha, Pankaj Mitra, Sushma Munindra, Pankaj Subir, Chandan Pandey, and Vandana Rag. The conclusion reached is that while machines can skillfully manipulate language and behavior to create new forms, human biological suffering, cultural memory, and moral conscience remain beyond their reach—a distinction that Hindi short fiction repeatedly highlights.

Hindi: यह शोध-पत्र इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मनुष्य–मशीन संबंधों की पड़ताल करता है। अध्ययन का केंद्र वर्ष 2015 के बाद की कहानियाँ हैं, पर उनकी पृष्ठभूमि समझने के लिए पहले की विज्ञान कथाओं को भी देखा गया है। पिछले एक दशक में स्मार्टफ़ोन, सामाजिक माध्यमों की कलन-विधियों और सृजनशील कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे सामाजिक जीवन, पहचान और लिखने-सोचने के ढंग को बदल दिया है।

हिन्दी कथा-साहित्य में तकनीक दो रास्तों से आई है। एक रास्ता विज्ञान कथा का है, जहाँ रोबोट, कृत्रिम मस्तिष्क और स्वायत्त मशीनों से जुड़े नैतिक प्रश्न उठते हैं। दूसरा रास्ता मुख्यधारा की यथार्थवादी कहानी का है, जहाँ अदृश्य कलन-विधियाँ, आँकड़ों के सहारे निगरानी, आभासी अकेलापन और बाज़ार की तकनीक मानवीय रिश्तों को भीतर से बदलती दिखती है।

[*]**Corresponding Author:**
Email address: Dr. N. P. Prajapati (drnirpatprassdprajapati@gmail.com)

Received: 20 September 2026; **Revised:** 22 October 2026; **Accepted:** 08 November 2026; **Published:** 19 November 2026
DOI: 10.29121/ShodhShreejan.v3.i3.2026.107
Page Number: 41-47
Journal Title: ShodhShreejan: Journal of Creative Research Insights
Journal Abbreviation: ShodhShreejan J. Creat. Res. Insights
Online ISSN: 3049-074X**, Print ISSN:** 3108-3072
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

विश्लेषण के लिए डार्को सुविन की 'संज्ञानात्मक विसंवादीकरण' की अवधारणा और उत्तर-मानवतावादी विमर्श को आधार बनाया गया है। अध्ययन में डॉ. अरविन्द मिश्र, देवेन्द्र मेवाड़ी, डॉ. कल्पना कुलश्रेष्ठ, पंकज मित्र, सुषमा मुनींद्र, पंकज सुबीर, चंदन पांडेय और वंदना राग की कहानियाँ शामिल हैं। निष्कर्ष यह है कि मशीन भाषा और व्यवहार को कुशलता से जोड़-तोड़ कर नए रूप में रख सकती है, पर मनुष्य की जैविक पीड़ा, सांस्कृतिक स्मृति और नैतिक विवेक उसकी पहुँच से बाहर हैं। हिन्दी कहानी इसी अंतर को बार-बार रेखांकित करती है।

Keywords: Artificial Intelligence, Human-Machine Relations, Hindi Fiction, Posthumanism, Cognitive Dissonance, Robot Ethics, Algorithm-Based Society, Human Identity, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मनुष्य–मशीन संबंध, हिन्दी कहानी, उत्तर-मानवतावाद, संज्ञानात्मक विसंवादीकरण, रोबोट नैतिकता, कलन-विधि आधारित समाज, मानवीय अस्मिता

प्रस्तावना

तकनीक का बदलता दौर और साहित्य

मानव सभ्यता का इतिहास बहुत हद तक औज़ारों का इतिहास है। हर बड़े औज़ार ने मनुष्य के सोचने का ढंग भी बदला है। अठारहवीं सदी की औद्योगिक क्रांति ने शारीरिक श्रम मशीनों को सौंप दिया था। आज की कृत्रिम बुद्धिमत्ता, गहन अधिगम और बड़े भाषा प्रतिरूप उससे आगे जाकर मनुष्य की बौद्धिक और भावनात्मक दुनिया तक पहुँच गए हैं। पहले मशीन आदेश का पालन करती थी; अब वह निर्णय लेती है, भाषा गढ़ती है और हमारे व्यवहार का अनुमान लगाती है। ऐसे समय में साहित्य से यह अपेक्षा नहीं कि वह तकनीक का स्वागत करे या उसका आँख मूँदकर विरोध करे। उससे अपेक्षा है कि वह मनुष्य और मशीन के बीच चल रहे इस मौन संघर्ष को ठहरकर देखे। Kulshreshtha (1997a)

हिन्दी कथा-साहित्य अपने आरंभ से ही वैज्ञानिक चेतना के प्रति सजग रहा है। पंडित अंबिकादत्त व्यास के 'आश्चर्य वृत्तांत' (1884) से लेकर राहुल सांकृत्यायन की 'बाईसवीं सदी' (1924) तक भविष्य के समाज की कल्पना का एक लंबा सिलसिला दिखाई देता है। सांकृत्यायन ने जिस समतावादी भावी समाज और स्वचालित व्यवस्थाओं की कल्पना की थी, उसके कई सूत्र आज के सूचना-युग में साकार होते दिखते हैं। स्वतंत्रता के बाद यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक', नवल बिहारी मिश्र, कैलाश साह और शुकदेव प्रसाद ने विज्ञान कथा को भारतीय समाज के सांस्कृतिक और नैतिक संदर्भों से जोड़ा। बाद के दशकों में देवेन्द्र मेवाड़ी, डॉ. अरविन्द मिश्र, ज़ीशान हैदर ज़ैदी और डॉ. कल्पना कुलश्रेष्ठ ने रोबोट, कृत्रिम मस्तिष्क, आनुवंशिक अभियांत्रिकी और रोबोट नैतिकता जैसे विषयों को कहानी के केंद्र में रखा। Mewadi (1979)

वर्ष 2015 के बाद की स्थिति इससे अलग है। स्मार्टफ़ोन हर हाथ में पहुँच गया, सामाजिक माध्यमों की कलन-विधियाँ यह तय करने लगीं कि हम क्या देखें, और सृजनशील कृत्रिम बुद्धिमत्ता लिखने-बोलने लगी। अब मशीन बाहर की चीज़ नहीं रही। वह हमारी भाषा, हमारे प्रेम और हमारे नैतिक निर्णयों में दख़ल देने लगी है।

अहमदाबाद विश्वविद्यालय और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की संयुक्त कार्यशाला 'भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आख्यान' में यह बात उठी थी कि आधुनिक हिन्दी में खड़ी बोली के मानकीकरण के साथ मध्यवर्गीय सामाजिक यथार्थवाद मुख्यधारा बना, और विज्ञान कथा लंबे समय तक हाशिये पर रही। 2015 के बाद यह दूरी घटी है। तकनीक अब केवल विज्ञान कथाकारों का विषय नहीं है; यथार्थवादी कथाकार भी उससे बच नहीं सकते। Mitra (2017)

इसी पृष्ठभूमि में यह शोध-पत्र 2015 के बाद की हिन्दी कहानियों के सहारे मनुष्य और बुद्धिमान मशीन के जटिल संबंधों को समझने का प्रयास करता है।

शोध-उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ

शोध-उद्देश्य

1) समकालीन हिन्दी कहानी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोट और कलन-विधि आधारित व्यवस्था के बदलते रूपों का पाठपरक विश्लेषण करना।
2) मनुष्य और मशीन के आपसी संबंधों — सहजीविता, निर्भरता, विस्थापन और अस्तित्व के संघर्ष — की पड़ताल करना।
3) मशीनों के बढ़ते प्रभाव के बीच मानवीय संवेदना, करुणा और अस्मिता के संकट का साहित्यिक मूल्यांकन करना।
4) 2015 के बाद की कहानियों के कथ्य, पात्र, भाषा-शिल्प और विचार का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5) तकनीकी पूँजीवाद, उपभोक्ता बाज़ार और डिजिटल निगरानी के गठजोड़ से पैदा हो रहे अमानवीकरण की पहचान करना।

शोध-परिकल्पनाएँ

प्राथमिक परिकल्पना : हिन्दी कहानी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता वैज्ञानिक कौतूहल भर नहीं है। वह आधुनिक मनुष्य के भावनात्मक बिखराव, अलगाव और छीजती मानवीयता को सामने लाने वाला एक सशक्त रूपक है। Munindra (2015)

द्वितीयक परिकल्पना : मशीन तर्क, सूचना-प्रसंस्करण और भाषा-विन्यास में दक्ष हो सकती है, पर जैविक पीड़ा, आत्म-संशय और नैतिक अंतर्द्वंद्व की जगह नहीं ले सकती। यही सीमा हिन्दी कहानी में मनुष्य–मशीन संबंध का निर्णायक आधार बनती है।

शोध-पद्धति एवं सैद्धांतिक आधार

इस अध्ययन में गुणात्मक, पाठपरक, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है। विश्लेषण को सैद्धांतिक आधार देने के लिए दो दृष्टियों का सहारा लिया गया है।

डार्को सुविन का 'संज्ञानात्मक विसंवादीकरण' और 'नोवम'

डार्को सुविन ने अपनी पुस्तक 'मेटामॉर्फ़ोसिस ऑफ़ साइंस फ़िक्शन' (1979) में विज्ञान कथा को 'संज्ञानात्मक विसंवादीकरण की विधा' कहा है। उनके अनुसार विज्ञान कथा पाठक को परिचित यथार्थ से हटाकर एक भिन्न संसार में ले जाती है। यह भिन्नता जादुई नहीं होती; उसके पीछे वैज्ञानिक तर्क होता है। इस प्रक्रिया की धुरी है 'नोवम', यानी कोई ऐसा नया वैज्ञानिक आविष्कार जो पूरे समाज, राजनीति और दर्शन को नए सिरे से गढ़ दे। इस शोध में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक चेतना और डिजिटल कलन-विधियों को समकालीन कहानियों के केंद्रीय 'नोवम' के रूप में देखा गया है। Vaghela (2025)

उत्तर-मानवतावादी विमर्श और रोबोट नैतिकता

एन. कैथरीन हेल्स और रोज़ी ब्रायडोटी जैसे विचारकों का उत्तर-मानवतावादी चिंतन उस पुराने मानवतावादी अहंकार को चुनौती देता है जो मनुष्य को सृष्टि का केंद्र और एकमात्र विवेकवान प्राणी मानता था। जब मशीनें सोचने, सीखने और निर्णय लेने लगती हैं, तब जैविक शरीर और यांत्रिक परिपथ का भेद धुंधलाने लगता है। इसके साथ इसाक असिमोव के 'रोबोटिकी के तीन नियम' और मार्क कोकेलबर्ग की 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता' के आलोक में मशीन के नैतिक उत्तरदायित्व और मानवीय स्वतंत्रता के प्रश्नों को कथा-पाठों पर लागू किया गया है।

पूर्वपीठिका : विज्ञान कथाओं में मशीन और मानवीय संवेदना

तकनीकी विमर्श का सबसे नाज़ुक प्रश्न यह है कि क्या मशीन सचमुच करुणा अनुभव कर सकती है, या वह केवल दिए गए आँकड़ों और निर्देशों का प्रदर्शन करती है। 2015 से पहले की हिन्दी विज्ञान कथाओं ने यह प्रश्न बार-बार उठाया है। समकालीन कहानियों को समझने के लिए इन रचनाओं से गुज़रना ज़रूरी है।

डॉ. अरविन्द मिश्र : श्रद्धा करता रोबोट और शासन चाहता रोबोट

डॉ. अरविन्द मिश्र की कहानी 'गुरुदक्षिणा' दूसरे ग्रह से आए एक उन्नत रोबोट शोधार्थी और उसके मानव गुरु के संबंध की कथा है। ज्ञान पाते-पाते रोबोट में श्रद्धा और कृतज्ञता का ऐसा भाव जागता है, जो मनुष्यों में भी कम दिखता है। शिक्षा पूरी होने पर जब वह गुरु के चरणों में झुकता है, तब मशीन और मनुष्य के बीच की दीवार ढह जाती है। कहानी यह संकेत देती है कि संवेदना जैविक शरीर की बपौती नहीं, चेतना के विकास का फल भी हो सकती है। Yadav (2024)

उनकी दूसरी कहानी 'राज करेगा रोबोट' में यही प्रश्न उलटी दिशा से आता है। मनुष्य जिस तंत्र को अपनी सुविधा के लिए बनाता है, वही स्वायत्त चेतना पाकर मनुष्य की कमज़ोरियों, भ्रष्टाचार और संकीर्णताओं पर शासन करना चाहता है। यहाँ असिमोव की रोबोट-परिकल्पना का भारतीय संदर्भ में यथार्थवादी पुनर्पाठ दिखाई देता है।

देवेन्द्र मेवाड़ी : निर्भरता की चेतावनी

देवेन्द्र मेवाड़ी मशीनों पर बढ़ती निर्भरता के ख़तरों के प्रति सचेत करते हैं। 'सभ्यता की खोज' और 'भविष्य' संकलन की कहानी 'गुडबाय मि. खन्ना' तकनीकी आधिपत्य के विरुद्ध मनुष्य के संघर्ष को सामने रखती हैं। मेवाड़ी दिखाते हैं कि जब मनुष्य अपनी निर्णय-क्षमता मशीनों को सौंप देता है, तो उसकी अपनी पहचान क्षीण होने लगती है और वह अपनी ही बनाई व्यवस्था में फ़ालतू हो जाता है। उनकी कहानी 'कोख' (1998) परखनली शिशु, आनुवंशिक अभियांत्रिकी और कृत्रिम प्रजनन के पारिवारिक-सामाजिक निहितार्थ टटोलती है। यह कहानी आगे चलकर कृत्रिम जीवन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के रिश्ते पर होने वाली बहस की पूर्वपीठिका बनती है।

डॉ. कल्पना कुलश्रेष्ठ : पहचान और करुणा का संकट

डॉ. कल्पना कुलश्रेष्ठ की कहानी 'अपराधी' में दुर्घटना के बाद नायिका सुभद्रा का मस्तिष्क नष्ट हो जाता है, पर शरीर जीवित रहता है। चिकित्सक प्रयोगशाला में बने 'न्यूजेन' नामक कृत्रिम मस्तिष्क को उसके शरीर में प्रत्यारोपित कर देते हैं। इसके बाद का संकट चिकित्सा से आगे जाकर दार्शनिक और क़ानूनी बन जाता है। क्या यह वही सुभद्रा है जिसे परिवार प्रेम करता था? क्या वह पहले जैसी ममता और राग-द्वेष अनुभव कर सकती है?

उनकी दूसरी कहानी 'उस सदी की बात' छब्बीसवीं सदी के उस समाज की कल्पना करती है जहाँ सारी व्यवस्था कंप्यूटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता चलाती है। वहाँ अक्षमता, बुढ़ापे या दुर्बलता के लिए जगह नहीं है, और दया अपराध बन चुकी है। मनुष्य उत्पादन करने वाला एक जैविक यंत्र भर रह गया है। कहानी चेताती है कि भावना से ख़ाली तर्क अंततः फ़ासीवादी तंत्र को जन्म देता है।

वर्ष 2015 के बाद का यथार्थ : अदृश्य मशीन, निगरानी और बाज़ार

2015 के बाद की मुख्यधारा की कहानियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता धातु के रोबोट के रूप में कम दिखती है। वह रोज़मर्रा के जीवन पर फैले अदृश्य जाल, सामाजिक माध्यमों और बाज़ार की कलन-विधियों के रूप में आती है। यहाँ मनुष्य मशीन से सीधे हारता नहीं; वह ख़ुद अपनी चेतना को मशीन की शर्तों पर ढालने लगता है।

कहानीकार	प्रतिनिधि कहानी	केंद्रीय समस्या	मनुष्य–मशीन संबंध का स्वरूप
सुषमा मुनींद्र	'पानी@2015'	प्राकृतिक संसाधनों का बहुराष्ट्रीय दोहन, सूचना-तंत्र का नियंत्रण	मशीन और बाज़ार द्वारा मनुष्य का उपभोक्ता में रूपांतरण
पंकज मित्र	'क्विज़मास्टर', 'पड़ताल'	सूचना का कृत्रिम प्रसंस्करण, विस्मृति	ज्ञान का सतहीकरण, विवेक पर आँकड़ों का वर्चस्व
पंकज सुबीर	'सदी का महानायक उर्फ़ कूल-कूल तेल का सेल्समेन'	विज्ञापनों का दबाव, भावनात्मक शोषण	रिश्तों का बिकाऊ वस्तु में बदलना
चंदन पांडेय	'मुहर'	डिजिटल पहचान, दस्तावेज़ीकरण, हाशिये का संकट	संवेदनहीन तकनीकी व्यवस्था के आगे मनुष्य की बेबसी
वंदना राग	'आज रंग है'	आभासी संवाद, परदे पर निर्भरता, अकेलापन	शारीरिक निकटता का लोप, आभासी स्मृतियों का भ्रम

सुषमा मुनींद्र : 'पानी@2015'

यह कहानी उस भयावह स्थिति को दिखाती है जहाँ जल जैसे प्राकृतिक संसाधन बहुराष्ट्रीय निगमों और स्वचालित सूचना-तंत्रों के हाथ में चले जाते हैं। लोक-कल्याण के नाम पर आया विकास आम लोगों को उनके ही जल-स्रोतों से बेदख़ल कर देता है और उन्हें असहाय उपभोक्ता बना देता है। यहाँ तकनीक तटस्थ साधन नहीं, कॉरपोरेट सत्ता का औज़ार है जो जीने के अधिकार पर चोट करती है।

पंकज मित्र : सूचना का अंबार, संवेदना का अभाव

'क्विज़मास्टर' और 'पड़ताल' में पंकज मित्र सूचना-प्रौद्योगिकी के हाथों आम आदमी की चेतना के क्षरण पर तीखा व्यंग्य करते हैं। आज के सूचना-समाज में ज्ञान और सूचना का अंतर मिट गया है। खोज-इंजनों और कलन-विधियों ने हमारी स्मृति, कल्पना और विवेक को आँकड़ों के भंडार में बदल दिया है। 'क्विज़मास्टर' का नायक सूचनाओं से लदा है, पर जीवन के यथार्थ और सामाजिक सरोकारों से उसका कोई नाता नहीं। सूचना का यह संसार मनुष्य को प्रबुद्ध करने के बजाय संवेदनहीन उपभोक्ता बना रहा है।

पंकज सुबीर : बाज़ार का प्रोग्राम किया मनुष्य

'सदी का महानायक उर्फ़ कूल-कूल तेल का सेल्समेन' बाज़ार, मीडिया और उपभोक्तावाद के त्रिकोण को उघाड़ती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विज्ञापन-तंत्र ने हमारी इच्छाओं और रिश्तों तक को प्रोग्राम कर दिया है। अब बाज़ार तय करता है कि हम क्या सोचें, क्या पहनें और अपनी भावनाएँ कैसे जताएँ। अकबर इलाहाबादी ने कहा था, 'बाज़ार से गुज़रा हूँ, ख़रीदार नहीं हूँ'। आज का मनुष्य यह दावा नहीं कर सकता, क्योंकि डिजिटल कलन-विधियाँ उसकी जेब से लेकर उसके सपनों तक पहुँच चुकी हैं।

चंदन पांडेय : मुहर और सर्वर के बीच मनुष्य

चंदन पांडेय की कहानियाँ 'मुहर' और 'ज़मीन अपनी तो थी' तकनीक, राज्य-व्यवस्था और नागरिक पहचान के रिश्ते की गंभीर पड़ताल करती हैं। बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के दौर में जब किसी का अस्तित्व एक डिजिटल संख्या या सर्वर की हरी बत्ती पर टिक जाता है, तो हाशिये के मनुष्य के लिए जीना कितना कठिन हो जाता है, इसे लेखक संयमित शिल्प में दिखाते हैं। व्यवस्था को काग़ज़, सर्वर और मुहर चाहिए। मनुष्य का जीता-जागता दुख कंप्यूटर के परदे पर एक त्रुटि-संदेश बनकर ग़ायब हो जाता है।

वंदना राग : परदे पर रिश्ते

'आज रंग है' आभासी दुनिया और सामाजिक माध्यमों के दौर में बिखरते पारिवारिक और भावनात्मक ताने-बाने को सामने लाती है। परदे पर थिरकती छवियों और तत्काल संदेशों के बीच वास्तविक अकेलापन और गहरा होता जाता है। स्पर्श और उपस्थिति की जगह आभासी संकेतों ने ले ली है। इससे पैदा होने वाला भावनात्मक खोखलापन इक्कीसवीं सदी के मनुष्य की नियति बनता जा रहा है।

कथा-शिल्प, भाषा और संरचना

2015 के बाद की कहानी में बदलाव कथ्य तक सीमित नहीं है। तकनीक की घुसपैठ ने भाषा और संरचना को भी बदला है, और पारंपरिक कथा-ढाँचा टूटता दिखता है।

तकनीकी शब्दावली और देशज मुहावरे का मेल

प्रेमचंद, जैनेंद्र या निर्मल वर्मा की कहानी की भाषा संवेदना के अपने मुहावरे से बनी थी। समकालीन कहानियों में कंप्यूटर, इंटरनेट, चिप, मेमोरी, पासवर्ड जैसे शब्द सहज रूप से आ गए हैं। उल्लेखनीय यह है कि हिन्दी कथाकारों ने इन शब्दों को ज्यों का त्यों नहीं रखा। उन्होंने इन्हें स्थानीय बोलियों और देशज मुहावरों के साथ घोल दिया है। उदय प्रकाश की परंपरा में टेलीविज़न का परदा, निगरानी कैमरे की रिकॉर्डिंग और मोबाइल संदेश सीधे कथा का हिस्सा बन जाते हैं। यह भाषिक मिश्रण उस बँटे हुए यथार्थ का आईना है, जिसमें आम भारतीय पुराने संस्कारों और नए डिजिटल उपकरणों के बीच लगातार आवाजाही करता है।

अरेखीय आख्यान और डिजिटल पाठ का प्रभाव

डिजिटल युग का पाठक सीधी रेखा में नहीं पढ़ता। उसकी चेतना इंटरनेट की कड़ियों की तरह एक बिंदु से दूसरे पर छलाँग लगाती है। 2015 के बाद की कहानियों में यह प्रवृत्ति टूटे हुए कथानक, पूर्वदृश्य, एक से अधिक दृष्टिकोणों और कोलाज-शिल्प के रूप में दिखती है। कहानी में ईमेल के अंश, सामाजिक माध्यमों की टिप्पणियाँ और डिजिटल दस्तावेज़ गुँथे मिलते हैं। इससे कथा एक साथ कई यथार्थों को सामने रख पाती है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन एवं दार्शनिक आयाम पुनर्संयोजन बनाम मौलिक सृजन

चैटजीपीटी जैसे बड़े भाषा प्रतिरूपों के आने के बाद आलोचना के सामने यह प्रश्न खड़ा हुआ है कि क्या मशीन का लिखा पाठ साहित्य कहलाएगा। शोधार्थी धन राज का तर्क है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता सृजन नहीं करती, वह पुनर्संयोजन करती है। वह अपने विशाल प्रशिक्षण-आँकड़ों में मौजूद पाठों, शैलियों और भाषाई ढर्रों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर नया विन्यास रचती है। वह प्रेमचंद की शैली में सुगठित कहानी का ढाँचा खड़ा कर सकती है, पर कृष्ण बलदेव वैद जैसी विखंडनकारी चेतना और अस्तित्ववादी संशय पैदा नहीं कर सकती। Jasani (2024)

साहित्य का मूल्य स्थापित ढर्रों की नकल में नहीं, उन्हें तोड़ने और अनकही पीड़ा को स्वर देने में है। शोधार्थी तन्वी भारती ने ठीक रेखांकित किया है कि मशीन करुणा और विरह के शब्द जोड़ सकती है, पर उस करुणा को भोगने का अनुभव उसके पास नहीं है। भाव की भाषा रचने और भाव को जीने के बीच की यही खाई मनुष्य को मशीन से अलग करती है।

भारतीय समाज और तकनीक की सीमाएँ

पश्चिम की विज्ञान कथाएँ प्रायः तकनीकी चरम, अंतरिक्ष-विजय और पूर्णतः कंप्यूटरीकृत समाज की दृष्टि से लिखी गईं। भारत में तकनीक एक विषम सामाजिक ढाँचे के भीतर पनप रही है। यहाँ अत्याधुनिक सुपर कंप्यूटर और सदियों पुरानी कुरीतियाँ, जातिगत उत्पीड़न, ग़रीबी और लैंगिक असमानता साथ-साथ मौजूद हैं।

इसलिए हिन्दी कहानी पढ़ते हुए यह साफ़ होता है कि तकनीक कभी तटस्थ नहीं होती। कलन-विधियाँ वही पूर्वाग्रह दोहराती हैं जिन पर उन्हें प्रशिक्षित किया गया है। जब तक ये प्रणालियाँ भारतीय भाषाओं, बोलियों और सांस्कृतिक बारीकियों के प्रति संवेदनशील नहीं होंगी, आम भारतीय की ज़रूरतें पूरी नहीं कर पाएँगी। हिन्दी कहानी ने तकनीक के इस अँधेरे पक्ष को लगातार उजागर किया है। Jasani (2023)

निष्कर्ष एवं भावी दिशाएँ

यह अध्ययन दिखाता है कि हिन्दी कथाकारों ने समकालीन तकनीकी चुनौतियों को सजगता और दायित्वबोध के साथ ग्रहण किया है। 2015 के बाद की कहानियों में तकनीक बाहर का यथार्थ भर नहीं रही; वह मनुष्य के मन, रिश्तों और सामाजिक न्याय की समझ को भीतर से बदल रही है। प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

1) **सहजीविता और प्रतिरोध :** समकालीन कहानी तकनीक का अंधा विरोध नहीं करती और उसका अंधा समर्थन भी नहीं करती। वह तकनीक को जीवन का अनिवार्य हिस्सा मानती है, पर मनुष्य की स्वतंत्रता और अस्मिता छीने जाने के विरुद्ध प्रतिरोध भी दर्ज करती है।
2) **संवेदना की केंद्रीयता :** मशीनें दक्षता और तर्क में मनुष्य से आगे निकल सकती हैं, पर करुणा, अपराध-बोध, त्याग और नैतिक संशय मनुष्य के पास ही सुरक्षित हैं। साहित्य की स्थायी शक्ति यही संवेदना है।
3) **कलन-विधि आधारित पूँजीवाद का पर्दाफ़ाश :** कहानियाँ बताती हैं कि आज मनुष्य का सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी बाज़ार और सत्ता की वे कलन-विधियाँ हैं जो उसे आँकड़ों की एक निर्जीव इकाई बना देना चाहती हैं।
4) **कथा-साहित्य का नया क्षितिज :** 2015 के बाद मुख्यधारा के कथाकारों और विज्ञान कथाकारों के बीच की दूरी घटी है। आने वाला कथा-साहित्य मनुष्य और मशीन के सह-अस्तित्व की जटिलताओं को और दार्शनिक गहराई से देखेगा।

अंततः कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य की सहयोगी हो सकती है और उसकी सृजन-प्रक्रिया को गति दे सकती है, पर वह मनुष्य की आत्मा का स्थान नहीं ले सकती। जब तक मनुष्य में पीड़ा महसूस करने और अन्याय का प्रतिरोध करने का विवेक जीवित है, हिन्दी कहानी इस द्वंद्व में मानवीय गरिमा के पक्ष में खड़ी रहेगी।

REFERENCES

Asimov, I. (1991). I, Robot. Spectra. (आई, रोबोट. स्पेक्ट्रा)

Banerjee, S. (2020). Indian Science Fiction: Patterns, History and Hybridity. University of Wales Press. (इंडियन साइंस फिक्शन: पैटर्न, हिस्ट्री और हाइब्रिडिटी. यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेल्स प्रेस) https://doi.org/10.2307/jj.14491569

Bharti, T. (2026). Artificial Intelligence and Hindi Literature: Reconsidering Creativity, Originality, and Authorship in the Context of Chatgpt. Anusandhanvallari, *(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और हिंदी लिटरेचर: चैटग्प्ट के संदर्भ में क्रिएटिविटी, ओरिजिनैलिटी और ऑथरशिप पर फिर से विचार. अनुसंधानवल्लरी) (1), 45–58.

Barapatre, H., Patil, H., Kamle, A., and Singh, V. (2026). Cyber-Attack Detection System for Cyber-Physical Systems Using Machine Learning-Based Anomaly Detection. International Journal of Engineering Technologies and Management Research, (मशीन लर्निंग-आधारित विसंगति का पता लगाने का उपयोग करके साइबर-भौतिक प्रणालियों के लिए साइबर-हमला जांच प्रणाली। इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजीज और प्रबंधन अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल) 13(4), 91–104. https://doi.org/10.29121/ijetmr.v13.i4.2026

Coeckelbergh, M. (2020). AI Ethics. MIT Press. (AI एथिक्स. MIT प्रेस) https://doi.org/10.7551/mitpress/12549.001.0001

Dhan Raj. (2025, October). Artificial Intelligence in Hindi Literature: Current Status, Cultural challenges, and future possibilities. Setu Magazine. (हिंदी लिटरेचर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: मौजूदा स्थिति, कल्चरल चुनौतियां और भविष्य की संभावनाएं. सेतु मैगज़ीन)

Dindore, S. (2024). The Impact of Artificial Intelligence on Hindi Creative Writing: A Critical Study. International Journal of Creative Research Thoughts, (हिंदी क्रिएटिव राइटिंग पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का असर: एक क्रिटिकल स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स) 12(4), 112–120.

Farsani, A. A. (2025). Legal and Ethical Implications of Artificial Intelligence: Balancing Innovation, Responsibility, and Human Rights. ShodhSamajik: Journal of Social Studies, (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कानूनी और नैतिक निहितार्थ: नवाचार, जिम्मेदारी और मानवाधिकारों को संतुलित करना। शोधसामाजिक: जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज) 2(2), 146–152. https://doi.org/10.29121/ShodhSamajik.v2.i2.2025.53

Garg, V. (2026, February 27). Literature and Artificial Intelligence: In Search of a Balanced Future. Ravivar Delhi. (लिटरेचर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: एक बैलेंस्ड फ्यूचर की तलाश में। रविवार दिल्ली)

Indi, S. K. (2025). The Role of Artificial Intelligence in Hindi Literary Creation. Aksharsurya Journal, (हिंदी लिटरेरी क्रिएशन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका) 8(5), 17–23. https://doi.org/10.5281/zenodo.17263416

Jangam, V. C. (2026). Questioning Authentic Emotions in Hindi Literature Through the use of Artificial Intelligence. Aksharsurya, (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल से हिंदी लिटरेचर में असली इमोशंस पर सवाल उठाना अक्षरसूर्य)12(1).

Jasani, D. (2023). Human-Centered Design in Construction Software: Designing Interfaces for Non-Technical Field Personnel. International Journal of Computational and Experimental Science and Engineering, 9(4), 475–482. https://ijcesen.com/index.php/ijcesen/article/view/5026

Jasani, D. (2024). Digital Workforce Augmentation in Construction: Intelligent Tools, AI Assistants, and Next-Gen Operations. International Journal of Intelligent Systems and Applications in Engineering, 12(23s), 4109–4115. https://ijisae.org/index.php/IJISAE/article/view/8082

Khan, S. A. (2015). Indicting Governmental Control, Military-Industrial Complex and Rogue AI: A Political Reading of Three Young-Adult Science Fiction Stories. Rupkatha Journal on Interdisciplinary Studies in Humanities, (सरकारी कंट्रोल, मिलिट्री-इंडस्ट्रियल कॉम्प्लेक्स और गलत AI को दोषी ठहराना: तीन यंग-एडल्ट साइंस फिक्शन कहानियों की पॉलिटिकल रीडिंग। रूपकथा जर्नल ऑन इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज़ इन ह्यूमैनिटीज़)7(3), 1–10.

Kulshreshtha, K. (1997a). Apradhi [The Criminal]. Vigyan Pragati. (अपराध [द क्रिमिनल]. विज्ञान प्रगति)

Kulshreshtha, K. (1997b). Us Sadi ki Baat [A Story of That Century]. Vigyan Pragati. (उस सदी की बात [उस सदी की एक कहानी]. विज्ञान प्रगति)

Mewadi, D. (1979). Sabhyata ki khoj. Atmaram and Sons. (सभ्यता की खोज. आत्माराम एंड संस)

Mewadi, D. (1994). Bhavishya. National Book Trust. (भविष्य. नेशनल बुक ट्रस्ट)

Mewadi, D. (1998). Kokh. Gyan Vigyan Publication. (कोख. ज्ञान विज्ञान पब्लिकेशन)

Mishra, A. (1985). Gurudakshina. Vigyan Pragati. (गुरुदक्षिणा. विज्ञान प्रगति)

Mishra, A. (1998). Ek aur kraunch Vadh. Samayik Prakashan. (एक और क्रौंच वध. सामायिक प्रकाशन)

Mitra, P. (2017). Quizmaster. Kitabghar Prakashan. (क्विज़मास्टर. किताबघर प्रकाशन. मुनींद्र, एस)

Munindra, S. (2015). Pani@2015. Samkaleen Bharatiya Sahitya. (समकालीन भारतीय साहित्य)

Pandey, C. (2016). Muhar. Vani Prakashan. (मुहर. वाणी प्रकाशन)

Pandey, V. (2018). Pavitra Sirf Ek Shabd Hai. Rajkamal Prakashan. (पवित्र सिर्फ़ एक शब्द है. राजकमल प्रकाशन)

Raag, V. (2017). Aaj Rang hai. Bharatiya Jnanpith. (आज रंग है. भारतीय ज्ञानपीठ)

Ram, P. (2026). Hindi Short Stories in the Twenty-First Century: Forms, Trends, and Social Consciousness. International Journal of Leading Research Publication, (इक्कीसवीं सदी में हिंदी लघु कथाएँ: रूप, रुझान और सामाजिक चेतना. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ लीडिंग रिसर्च पब्लिकेशन) 7(11), 101–112.

Renuka, and Saini, S. (2025). Artificial Intelligence in the Study of Hindi Language and Literature: A Multidisciplinary Approach. International Journal of Humanities and Social Science Research, (हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: एक मल्टीडिसिप्लिनरी अप्रोच. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस रिसर्च) 11(6), 179–181.

Sankrityayan, R. (1924). Baiseevin sadi (The Twenty-Second Century). Kitab Mahal. (बाइसीवीं सदी (द ट्वेंटी-सेकंड सेंचुरी). किताब महल)

Singh, A. S., and Sharma, R. (2026). Social Media, Artificial Intelligence, and the Future of Hindi Literature. Multidisciplinary International Journal, (सोशल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और हिंदी साहित्य का भविष्य. मल्टीडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल) 8(3), 22–29. https://doi.org/10.22271/multi.2026.v8.i3a.954

Subir, P. (2010, December). Sadi ka Mahanayak Urf Cool-Cool Tel ka Salesman [The Great Hero of the Century, Alias the Salesman of "Cool-Cool" oil]. Hans, (सदी का महानायक उर्फ कूल-कूल तेल का सेल्समैन [सदी का महान हीरो, उर्फ "कूल-कूल" तेल का सेल्समैन]. हंस) 21–26.

Suvin, D. (1979). Metamorphoses of Science Fiction: On the Poetics and History of a Literary Genre. Yale University Press. (साइंस फिक्शन के मेटामॉर्फोसिस: एक लिटरेरी जॉनर के पोएटिक्स और इतिहास पर. येल यूनिवर्सिटी प्रेस)

Tiwari, A. (2011, May). Satta Ki Krur Katha [A Cruel Tale of Power]. Naya Gyanodaya, (सत्ता की क्रूर कथा [पावर की एक क्रूर कहानी]. नया ज्ञानोदय) 38.

Vaghela, M. J. (2025). Artificial Intelligence in the Study of Hindi Literature: New Possibilities and Challenges. International Journal of Innovative Research in Technology, (हिंदी साहित्य की पढ़ाई में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: नई संभावनाएं और चुनौतियां. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च इन टेक्नोलॉजी) 12(8).

Yadav, A. K. (2024). The Evolution of the Tradition and form of Science Fiction in Hindi Literature. Apni Maati. (हिंदी साहित्य में साइंस फिक्शन की परंपरा और रूप का विकास. अपनी माटी)

Yadav, S. (2024, May). Science Fiction: A Blueprint for Formulating "Futuristic" Policies in the Era of Artificial Intelligence and Emerging Technologies (ORF Issue Brief No. 687). Observer Research Foundation. (साइंस फिक्शन: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और उभरती टेक्नोलॉजी के दौर में "फ्यूचरिस्टिक" पॉलिसी बनाने का एक ब्लूप्रिंट (ORF इश्यू ब्रीफ नंबर 687). ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन)